हनुमान

संख्या ५०२

₹१०

तलाश अपनी जड़ों की

जब वे मुड़ कर अपने बचपन के उन दिनों की ओर देखते हैं, जब उनके व्यक्तित्त्व का विकास हो रहा था, तब अनेक भारतीय बड़े स्नेह से अमर चित्र कथा की उन सचित्र पुस्तकों को याद करते हैं, जिन्होंने उनके जीवन में अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। यह एसीके – अमरचित्र कथा ही थीं जिन्होंने उन्हें अपनी भव्य विरासत की पहली झलक दिखलाई थी।

अमर चित्र कथा १९६७ में पेश की गयीं। इस समय चुनने के लिए अमर चित्र कथा की ४०० से ज्यादा पुस्तकें उपलब्ध हैं। संसारभर में इनकी ९ करोड़ से ज्यादा प्रतियां बिक चुकी हैं।

अब अमर चित्र कथा की पुस्तकें और भी बड़े पैमाने पर उपलब्ध हैं – भारतभर में १०००+ पुस्तक विक्रेताओं के पास। अपने नज़दीकी विक्रेता का पता जानने के लिए यहां लॉग ऑन करें : **www.ack-media.com.** अगर किसी पुस्तक विक्रेता तक पहुंचना आसान न हो तो आप सभी पुस्तकें हमारे ऑनलाइन स्टोर **www.amarchitrakatha.com** से खरीद सकते हैं। हम संसारभर में हर जगह पुस्तकें बड़ी जल्दी पहुंचा देते हैं।

हमारे पुस्तकों के भंडार में से आपको अपनी मनपसंद पुस्तक चुनने में आसानी हो, इसके लिए हमने पुस्तकों को छः वर्गों में विभाजित किया है।

महाकाव्य और पौराणिक कथाएँ
महाकाव्यों एवं पुराणों की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ

भारतीय उत्कृष्ठ साहित्य
भारतीय साहित्य की मनमोहक कहानियाँ

हास–परिहास और दंतकथाएँ
सदाबहार लोक कथाएं, दंत कथाएं तथा विवेक और हास्य से भरी कहानियाँ

वीरांगना
वीर पुरुषों तथा महिलाओं की मन छूने वाली कहानियाँ

दिव्यदृष्टा
विचारकों, समाज सुधारकों तथा राष्ट्र निर्माताओं की प्रेरक कहानियाँ

समकालीन साहित्य
भारतीय समकालीन साहित्य की उत्कृष्ठ कहानियाँ

कथा
अनंत पै

चित्र
राम वाईरकर

संपादक
अनंत पै

मुखपृष्ठ
राम वाईरकर

Amar Chitra Katha Pvt Ltd

ISBN 978-81-8482-254-0
Published by Amar Chitra Katha Pvt. Ltd., 204, 2nd Floor, Dhantak Plaza, Makwana Road, Gamdevi, Marol, Andheri (East), Mumbai - 400059, India.
For Consumer Complaints Contact Tel : + 91-2249188881/2
Email: customerservice@ack-media.com
Printed in India
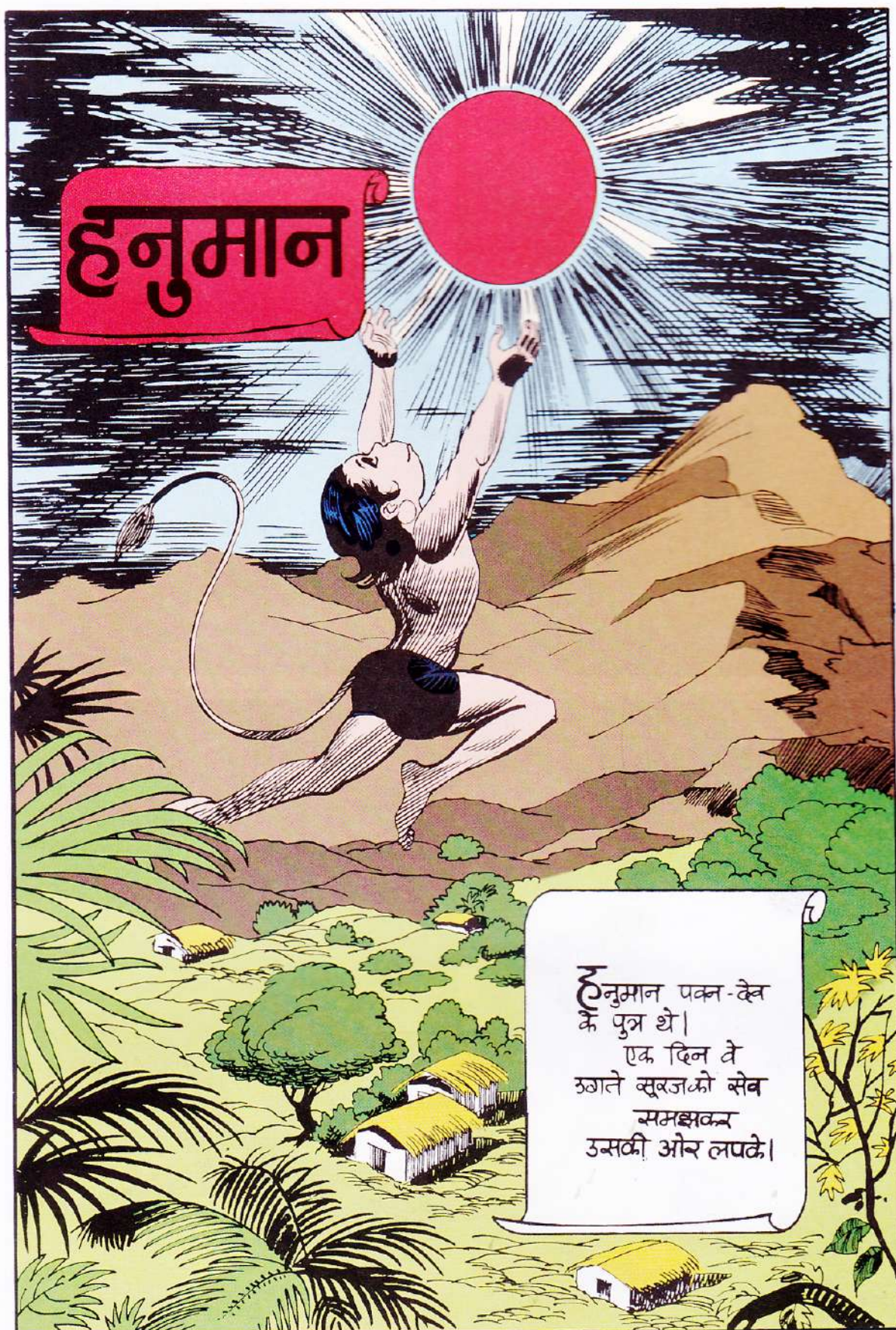
हनुमान
हनुमान पवन-देव
के पुत्र थे।
एक दिन वे
उगते सूरज को सेब
समझकर
उसकी ओर लपके।

आयु के साथ-साथ उनका बल भी बढ़ता गया।
एक बार उन्होंने निहत्थे ही राजकुमार सुग्रीवको मस्त हाथी से बचाया।

किष्किन्धा के नरेश बाली के सुग्रीव को देश-निकाला देने के बाद हनुमान भी उनके साथ पम्पा नदी के पास वन में रहने लगे। बड़ी कठिनाई से दिन बीत रहे थे।

हनुमान गरीब आदमी का रूप धारण करके उन दोनों के पास पहुँचे।
आप दोनों साधु कहाँ जा रहे हैं?
हमें वानर-राज सुग्रीव से मिलना है।

ये मेरे बड़े भाई राम हैं – अयोध्या के युवराज, जिन्हें बनवास दिया गया है। रावण ने इनकी पत्नी सीता का हरण किया है। उन्हें खोजने के लिये हम सुग्रीव की सहायता चाहते हैं।
लक्ष्मण की बात सुन कर हनुमान का हृदय प्रेम और भक्ति की एक विचित्र भावना से भर आया!

उन्होंने अपना बनावटी भेष उतार फेंका और रामके चरणोंमें पड़ गये।
मुझे क्षमा कीजिये। मैं वास्तव में सुग्रीव का मंत्री हनुमान हूँ।
हमें सुग्रीव के पास ले चलोगे?

अपना वास्तविक रूप धारण करके हनुमान हर्षपूर्वक राम तथा लक्ष्मण को अपने कंधे पर बैठा कर ले चले!
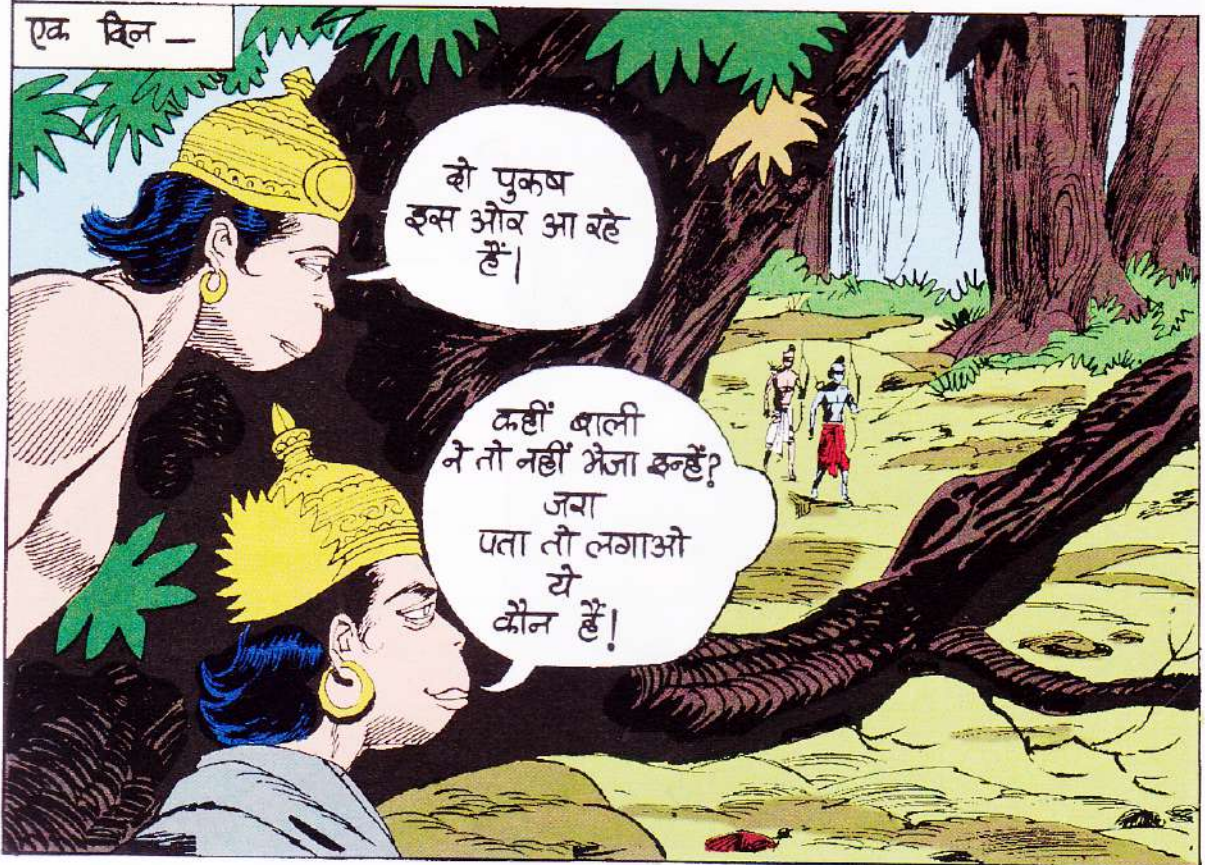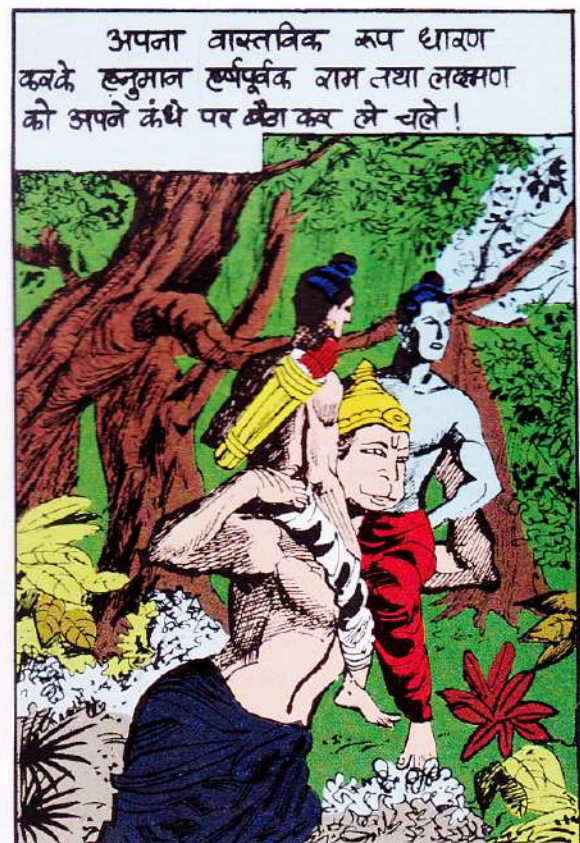
बड़ा ही आनन्ददायक था यह मिलन! दोनों भाई नये मित्रों के बीच थे।

आप बाली का वध करने में मेरी सहायता करेंगे?

तुम अपने भाई का वध क्यों करना चाहते हो?
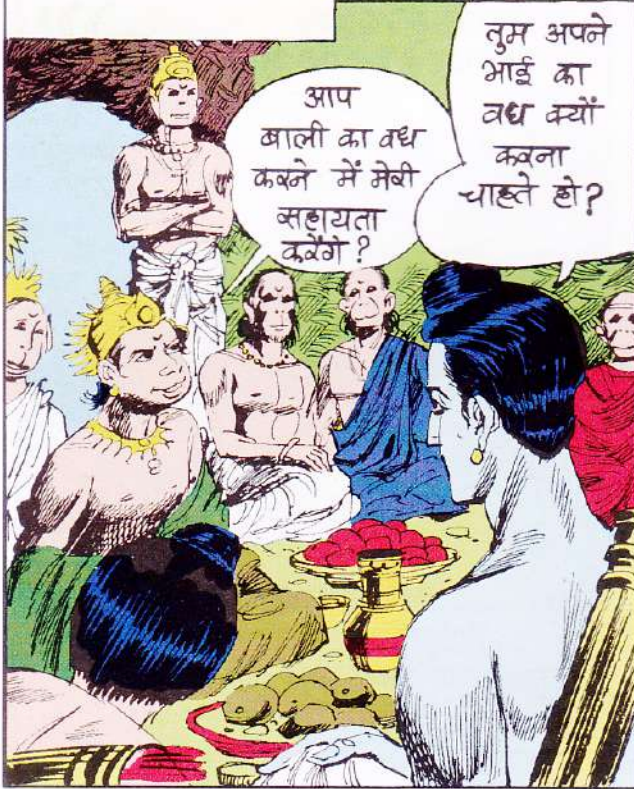
"एक बार मैं बाली के साथ एक राक्षस से लड़ने गया था। बाली मुझे राक्षस की बड़ी गुफा के द्वार पर खड़ा कर के अन्दर चला गया। जब बहुत प्रतीक्षा करने के बाद भी वह नहीं लौटा, तो मैंने समझा, वह मारा गया। मैं वापस चला आया।

तब से मैं अपनी जान बचाता फिर रहा हूँ। क्या आप उसे मारने में मेरी सहायता करेंगे?
हाँ, करूँगा।

सुग्रीव ने लाकर एक चूड़ी राम को दिखायी
हमने रावण के रथमें एक महिला को देखा था। उस महिला ने ये आभूषण हमारी ओर फेंके थे।
ये सीता के ही आभूषण हैं।

सुग्रीव ने बाली को द्वन्द्व युध्द के लिये बुलाया। राम उसका वध करने की घात में थे पर उसे पहचान न सके क्योंकि दोनों भाइयों की सूरत एक-सी थी।

अगली मुठभेड़ में राम ने सुग्रीवको एक हार पहननेको दिया। इससे उन्हें बाली को तीर का निशाना बनाने में कठिनाई नहीं हुई।

सुग्रीव किष्किन्धा का राजा बना बालीके पुत्र अंगद को युवराज बनाया गया।
महाराज सुग्रीव की जय!
युवराज अंगद चिरायु हों!

सुग्रीव ने अपने वानर-वीरों को सीता को खोजने के लिये चारों दिशाओं में भेजा।
हर स्थान खोजना होगा।
हम उन्हें अवश्य खोज निकालेंगे।

वानर अलग-अलग दिशाओंकी ओर चल दिये।

हनुमान, अंगद और जाम्बवंत दक्षिण की ओर चलते-चलते समुद्र के किनारे जा पहुँचे।

निकट की एक पहाड़ी पर उनकी भेंट गरुड़राज से हुई।
समुद्र के पार रावण की राजधानी है लंका। सीताजी वहीं बन्दी हैं।

समुद्र के पार! सौ योजन दूर! समुद्र हम कैसे पार करेंगे?

मैं बीस योजन फाँद सकता हूँ!
और मैं तीस योजन!
जाम्बवंत - तुम?

तुम कितना फाँद जाओगे?
मैं ठहरा बूढ़ा आदमी फिर भी नब्बे फाँद लूँगा।

इस बातचीत के दौरान हनुमान चुप बैठे थे। सबने उनकी ओर देखा।
हनुमान, तुम्हीं अकेले पार जा कर वापस भी आ सकते हो। जाओगे?
अवश्य!

विशालकाय पक्षी की भाँति हनुमान आकाश में उड़ चले।

एक विशाल पर्वतने समुद्र से निकल कर उनका रास्ता रोका। हनुमान उससे जा टकराये।

मै मैनाक हूँ। तुम्हारे पिता ने एक बार मेरी जान बचायी थी। कुछ देर विश्राम करके चले जाना।
धन्यवाद! पर मैं रुक नहीं सकता।

हनुमान उड़े जा रहे थे कि राक्षसी सुरसा मुँह फाड़कर समुद्र से निकली।

तुम्हें मेरे मुख में आना होगा।

हनुमान अपने शरीर को बड़ा ... और बड़ा... करने लगे....

उधर सुरसा भी अपने मुख को उतना ही अधिक फैलाने लगी।

आखिरकार हनुमान लंका पहुँच गये।

नगर में प्रवेश करना भी समस्या है। चारों ओर पहरेदार दिखायी दे रहे हैं। इतना छोटा बनना पड़ेगा कि कोई मुझे देख ही न पाये!

हनुमान नगर में घूमने लगे — -- गली गली — मकान मकान...

उन्हें दिखायी दिये शक्तिशाली लड़ाकू हाथी....

... घातक अस्त्रशस्त्र...

.. और नगरकी रक्षा करने वाले भीमकाय सैनिक।

लंका नगरी बड़ी आकर्षक थी और चमचमा रही थी। हनुमान कुछ उदास हो गये।
जब मेरे स्वामी रावण पर चढ़ाई करेंगे तो यह सुन्दरता नष्ट हो जायेगी!

नगरमें घूम लेने के बाद हनुमान रावण के महल में पहुँचे।

रात का समय था —
— सब सोये पड़े थे.......

... महल की सुन्दर रानियाँ......

... रावण का शूरवीर पुत्र, इन्द्रजित...

और रावण का भाई कुम्भकर्ण
जिसे वर्ष में छः महीने
सोने की आदत थी।

और स्वयं दशानन रावण।

रावण के कक्ष में हनुमान ने एक सुन्दरी को सोते देखा।
ये सीता जी हैं? कदापि नहीं! वे कभी इस नरपिशाच को आत्म-समर्पण नहीं कर सकतीं!

सीता को महल में न पाकर वे पास ही अशोक वाटिका गये।

सीता एक वृक्ष के नीचे बैठी राम के ध्यान में डूबी थीं।
इनके पास जाना सम्भव नहीं – राक्षसियों ने घेर रखा है।

हनुमान एक पेड़ पर छिपे रहे। सुबह रावण वहाँ आया।
बोलो, अब भी तुम्हें मेरी पत्नी बनना स्वीकार नहीं?
यह बात कहना भी पाप है।

अपने स्वामी की धनुष की टंकार मैं सुन रही हूँ। तुम्हारा काल आ गया है।
हुँ: - राम मेरा क्या बिगाड़ लेगा?

रावण लौट गया और राक्षसियाँ सीता को सताने लगीं।
रावण से विवाह कर लो। ऐसा पति ढूँढ़े नहीं मिलेगा।
कब तक मैं यह कष्ट सहती रहूँगी?

जब सीता कुछ समय के लिये अकेली रह गयीं तब हनुमान ने राम की दी हुई अंगूठी निकाली और उनकी गोद में गिरा दी।

हनुमान वृक्ष से उतर कर सीता के सामने जा खड़े हुए और सारी बात उन्हें बता दी।
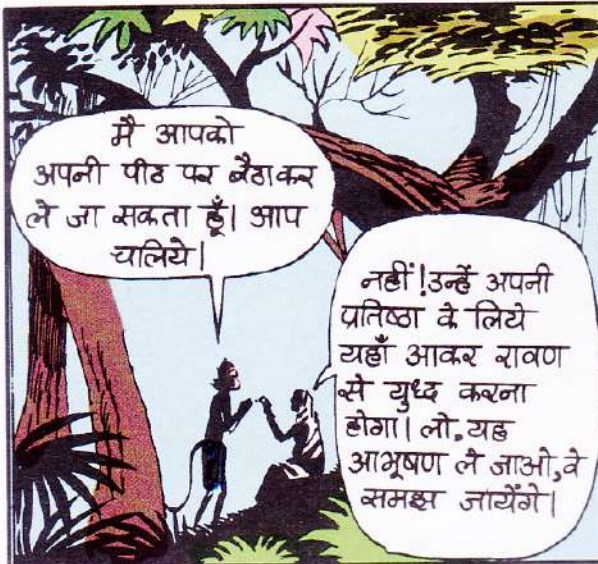
हनुमान ने रावण को छकाने का निश्चय किया।

वृक्ष उखाड़कर, और राक्षसों को मार-कर, हनुमान ने हाहाकार मचा दिया।

मार खा कर राक्षस रावण के पास पहुँचे।
महाराज, कोई यमदूत वाटिका को उजाड़ रहा है।

रावण ने हनुमान को पकड़ने के लिये सैनिक भेजे।

परन्तु कोई उनके पास नहीं फटक पाया।

हनुमान अब अपने वास्तविक आकार में आ गये थे। फिर भी इन्द्रजित उन्हें हरा नहीं सका। तब उसने बड़ी सशक्त नाग-फाँस छोड़ी। नाग-फाँस ने हनुमान को बाँध लिया।

राक्षसों ने उन्हें कस कर बाँधा।
मैं बँधा ही रहूँ - तभी रावण के दरबार में पहुँच पाऊँगा।

हनुमान को दैदीप्यमान दरबार में लाया गया।

जल्लाद को बुलाओ!

रावण के धर्मात्मा भाई विभीषण ने रावण को रोका।
दूत की हत्या नहीं की जा सकती।

तब राक्षसोंने हनुमान की पूँछ पर खूब कपड़ा लपेटा और उसे तेल से भिगो दिया। पूँछ बढ़ी....

.... बढ़ती गयी।
और कपड़ा लाओ!
तेल भी!

पूँछ बढ़ती ही रही...
तेल चुक गया है।
महाराज को बताओ।

हनुमान की पूँछ बढ़ती ही जा रही थी।
महल में तेल नहीं रहा।
अब क्या बात है?

ठीक है! पूँछ जला दो!

सैनिकों ने हनुमान को गली-गली घुमाया।
मूर्ख हैं! नगर के सब स्थान मुझे दिखा रहे हैं।

अचानक हनुमान छोटे हो गये। रस्सियाँ पृथ्वी पर गिर गयीं।

हनुमान गर्जना करके एक मकान की छत पर चढ़ गये।
राम की जय! सीता की जय!

एक छत से दूसरी छत पर कूद-कूद कर उन्होंने सारे नगर को आग लगा दी।

फिर समुद्र के जल से उन्होंने पूँछ की आग बुझा दी। उन्हें आश्चर्यजनक सफलता मिली थी।

उधर उनके साथी वानर धैर्यपूर्वक उनकी राह देख रहे थे।
वे रहे हनुमान!

वानरों ने हर्ष से हनुमान को उठा लिया और नाचने लगे।
हनुमान चिरायु हों!

खोजी वानर वीर वापस लौटे।
यह मुकुट-मणि सीता की ही है— मेरी प्रिय पत्नी की।

सुग्रीव ने सेना को एकत्र किया....

पंक्तिबध्द वानर सेना चली...

...और विशालकाय रीछ सेना भी।

यह विशाल सेना समुद्र-तट पर जा पहुँची। दूसरे किनारे लंका थी....
.... जहाँ सीता जी बन्दी थीं।

इस सागर को कैसे पार करें?
इस पर पुल नहीं बना सकते?
पुल? कैसे?
वानर नल महान शिल्पी हैं! वे बना सकते हैं!
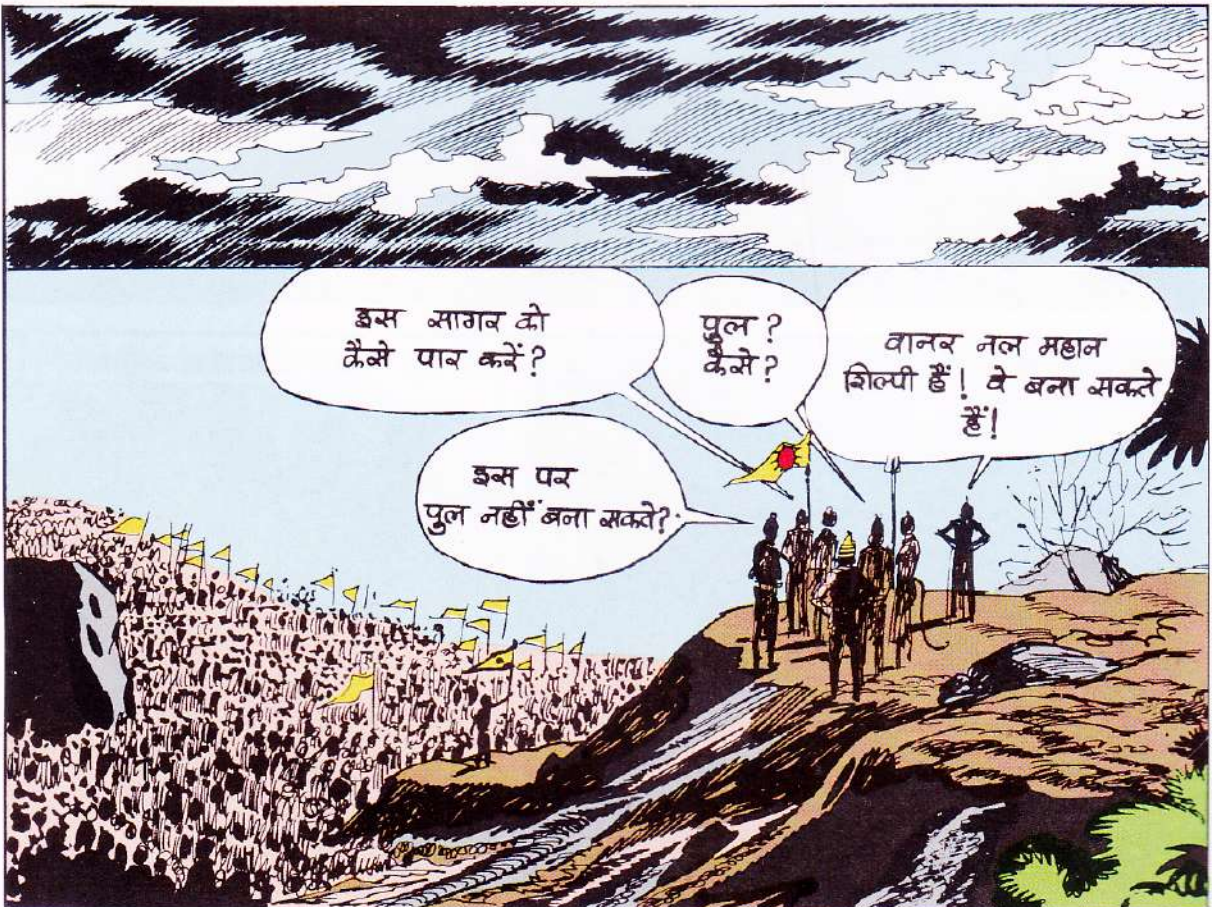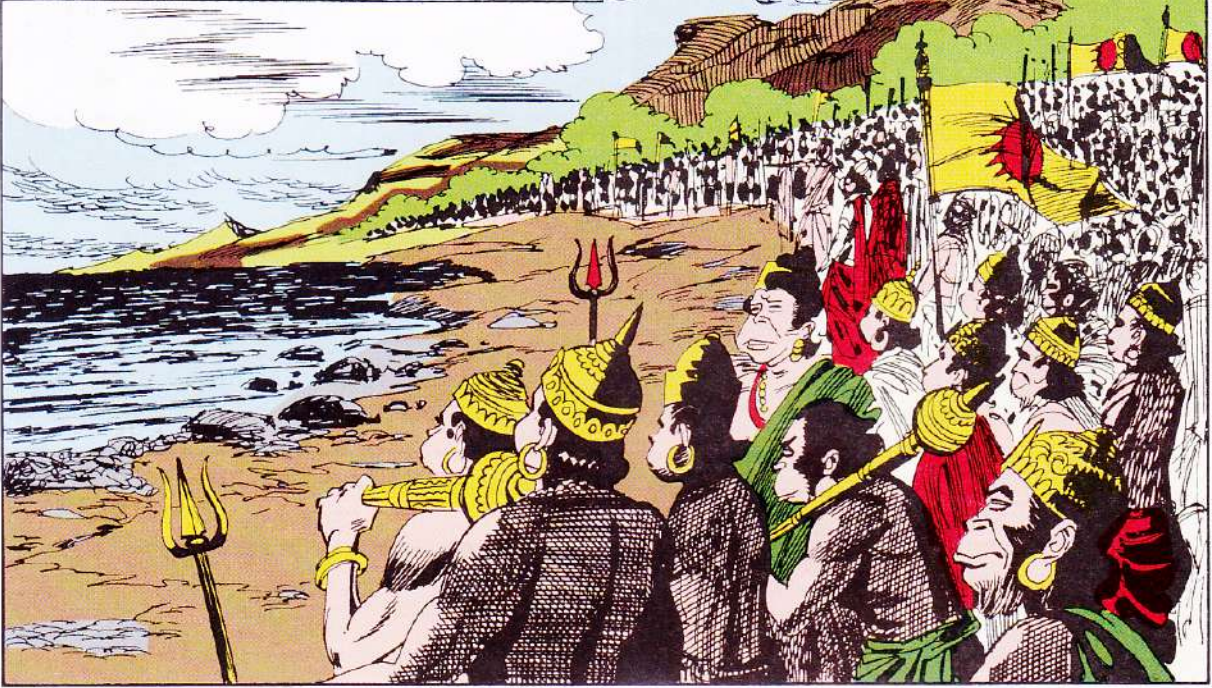
इस बीच रावण के भाई विभीषण राम के पास आये।
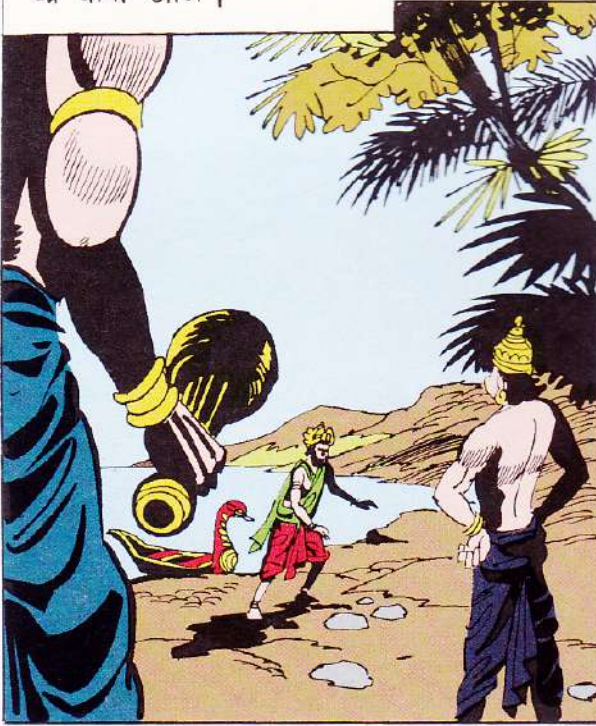
मैं अपने पापी भाई के साथ नहीं रहना चाहता। क्या आप मुझे शरण देंगे?

क्या इनपर विश्वास किया जा सकता है?
इसमें कोई चाल भी हो सकती है!
मेरा विचार है कि इनपर विश्वास किया जा सकता है। इन्होंने शरण माँगी है, इसलिये चाल हो तो भी मैं इन्हें निराश न करूँगा।
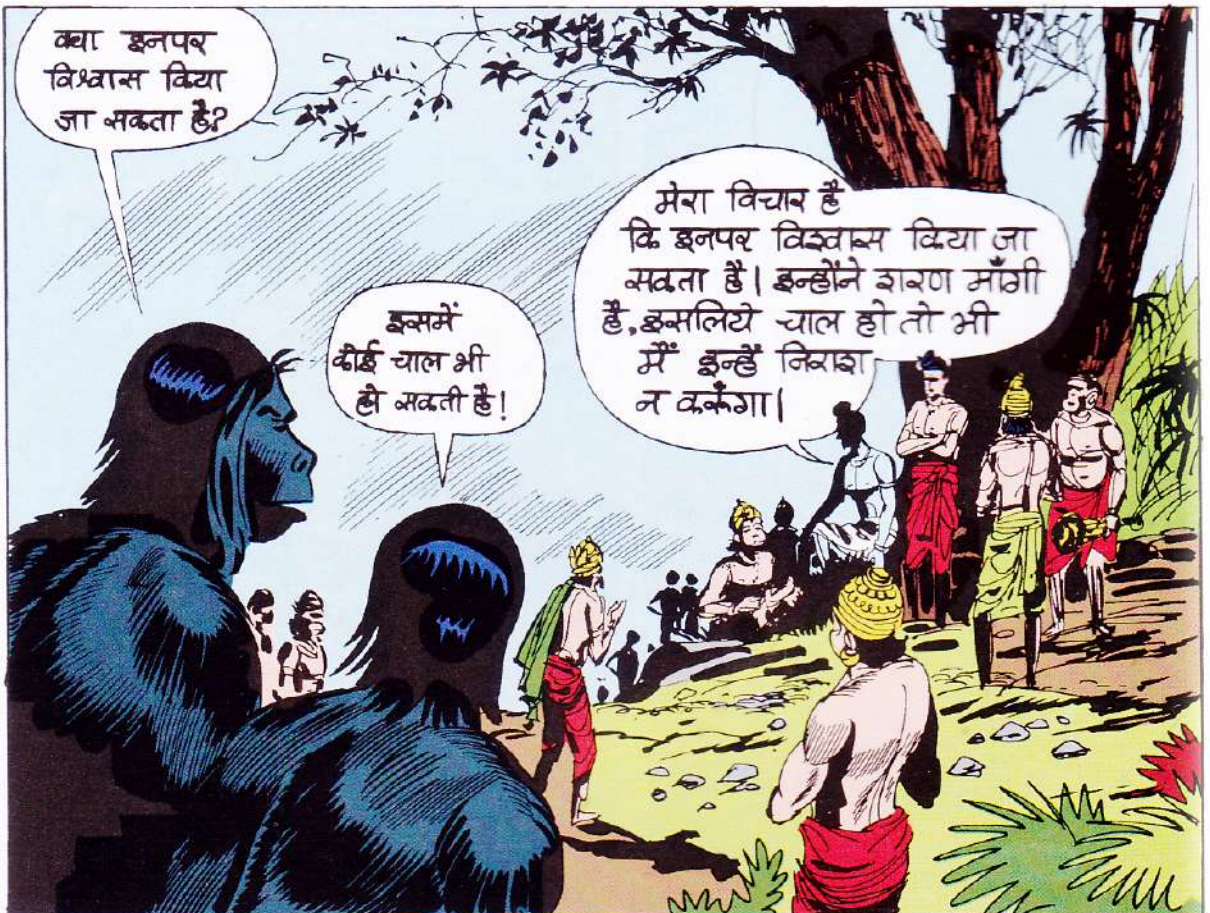
शीघ्र ही नल ने पत्थरों का पुल बनवाना शुरू किया।
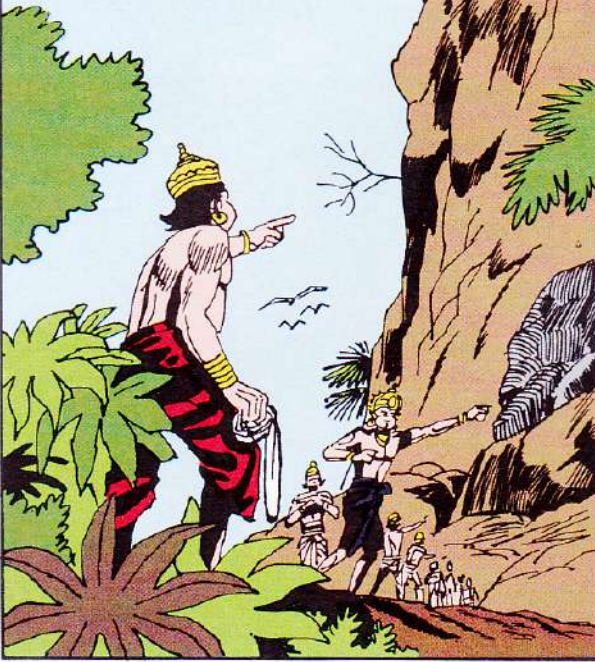
हाथों - हाथ पहाड़ से बड़े-बड़े पत्थर आने लगे......
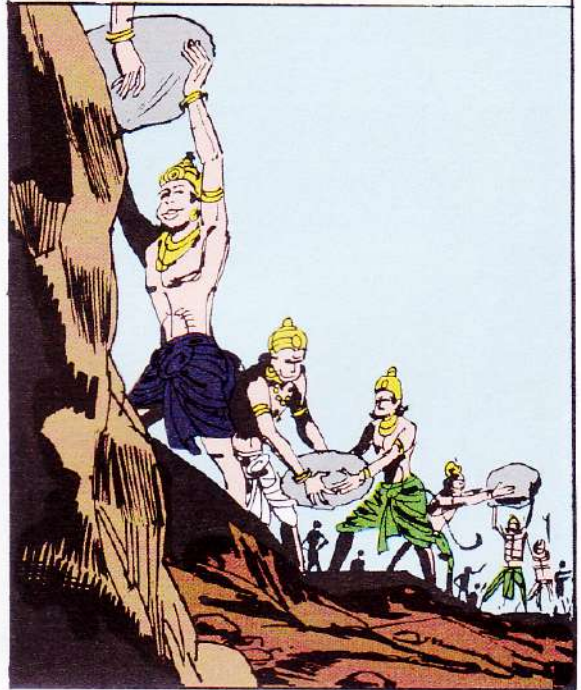
.... और पुल तैयार हो गया।

सेना उसपर चलने लगी।
चलो लंका!
चलो लंका!

राम को हनुमान ने अपने कंधे पर बैठाया–
और अंगद ने लक्ष्मण को।

सागर पार कर के राम की सेना लंका जा पहुँची। उसने नगर के बाहर सागर-तट पर डेरा डाला।

कुछ राक्षस वानरों का भेष धर कर वहाँ आये।

उत्तर में हमारे कितने सैनिक हैं?

परन्तु विभीषण ने उन्हें पहचान लिया।
दक्षिण में कमान किसके हाथ में है?
हनुमान और लक्ष्मण के!

ये जासूस हैं! इन्हें मार डालें?
नहीं- छोड़ दो। रावण को बतायेंगे कि उनका शत्रु कैसा है।
राजकुमार राम बड़े उदार हैं!
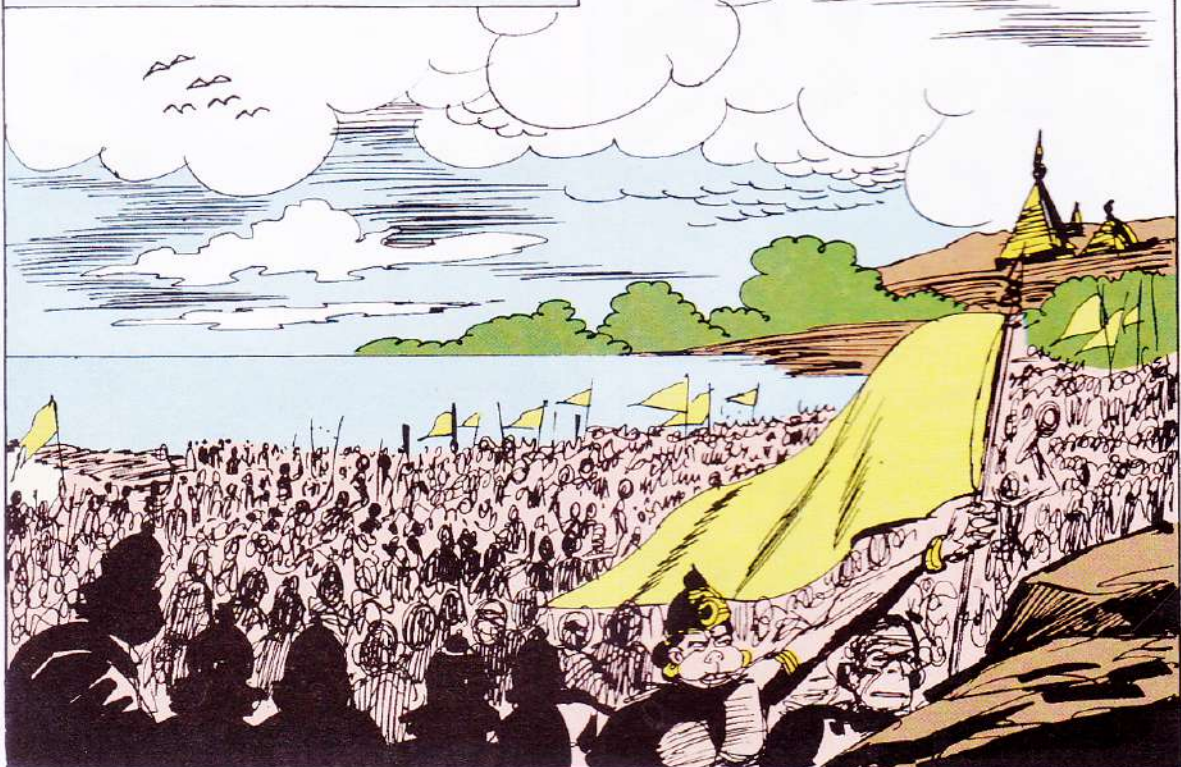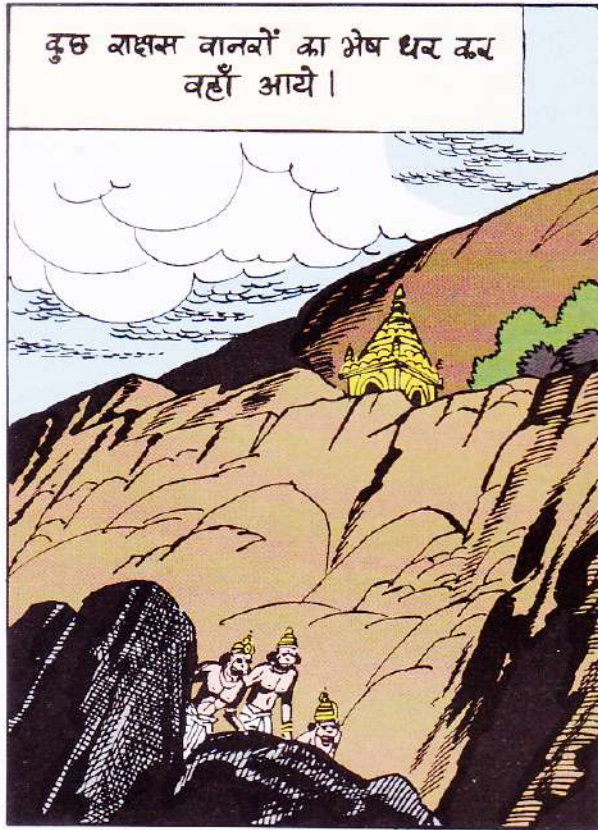
युध्द से पहले रावण ने एक मीनार पर चढ़ कर शत्रु की सेना का निरीक्षण किया।

बीच में राम का रथ है - जो इन्द्रने दिया है। उसके बायें हैं सुग्रीव।
हुं! हम इन सब को मौत के घाट उतार देंगे।

युध्द आरंभ हुआ। वानर शत्रु पर पत्थर बरसाने लगे।

राक्षस - सेनापति जम्बूमाली हनुमान से लड़ने आया। हनुमान ने उसका रथ चूर-चूर कर दिया।
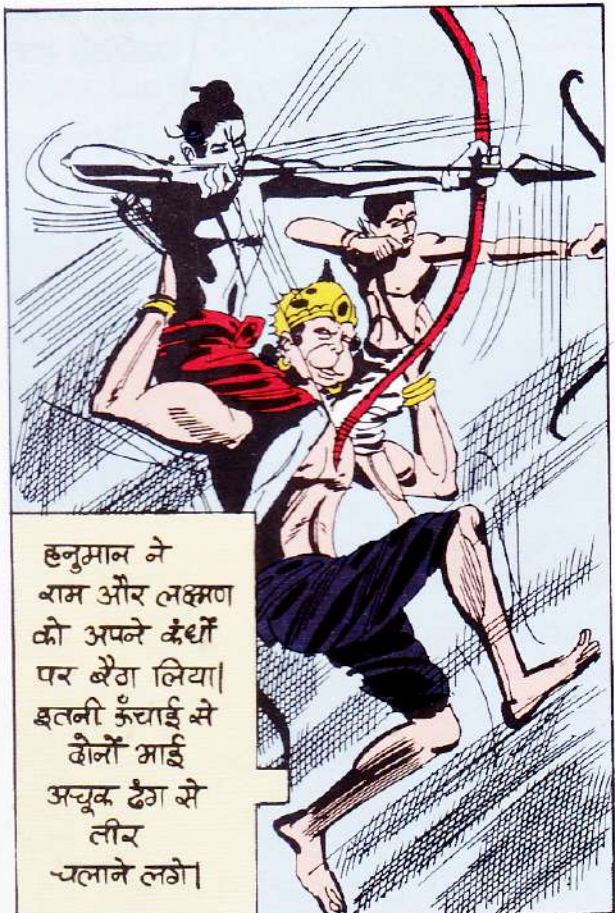
हनुमान ने राम और लक्ष्मण को अपने कंधों पर बैठा लिया। इतनी ऊँचाई से दोनों भाई अचूक ढंग से तीर चलाने लगे।

धूम्राक्ष विशाल सेना ले कर मैदान में आया। वह रावण के श्रेष्ठतम सेनापतियों में से था।
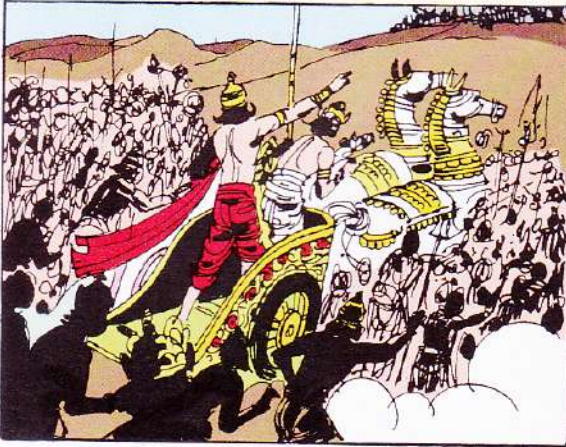
हनुमान ने उसे एक हाथ से उठाकर मार डाला।

फिर आया दुष्ट राक्षस अकम्पन। वानर उसे देख कर भागने लगे।
भागो मत! घबराओ मत!

हनुमान ने एक वृक्ष उखाड़ कर उससे अकम्पन का काम तमाम कर दिया। सैकड़ों राक्षस उसकी विशाल काया के नीचे दब कर ही मर गये।

इन्हें नष्ट करना ही पड़ेगा।
चिन्ता न करें, पिताजी। मैं एक-एक को यमलोक पहुँचा दूँगा। वे मुझे देख भी नहीं पायेंगे।
अकम्पन की मृत्यु से रावण को बड़ा आघात पहुँचा। उसके कई सेनापति खेत रहे थे। उसका शोक क्रोध में बदल गया।

रावण के पुत्र इन्द्रजित को देवताओं ने वर दिया था कि युद्ध में शत्रु उसे देख नहीं पायेंगे।
अरे! लक्ष्मण को बाण लगा!

जब युध्द रुका (उन दिनों सूरज डूबने के बाद युध्द नहीं होता था।) तब सब लोग दुःखी मन से धराशायी लक्ष्मण के पास आये।

अब क्या करना चाहिये?
वैद्य को बुलाओ।

हनुमान भाग कर वैद्य सुषेण के पास पहुँचे।
मुझे कहाँ ले जा रहे हो?
हमारे राजकुमार का उपचार करना है।

लक्ष्मण के उपचार के लिये संजीवनी बूटी चाहिये।

संजीवनी बूटी बहुत दूर गंधमादन पर्वत पर उगती थी। उसकी जड़ से लक्ष्मणको प्राणदान मिल सकता था। वीर हनुमान तुरन्त संजीवनी लेने चल पड़े।

हनुमान सैकड़ों वृक्षों में संजीवनी बूटी को पहचान न पाये। समय बहुत कम था।
संजीवनी बूटी कौन सी है?

समय नष्ट न हो, इस कारण हनुमान ने अपना आकार बढ़ाया तथा गंधमादन पर्वत को ही उठा कर लंका ले आये।
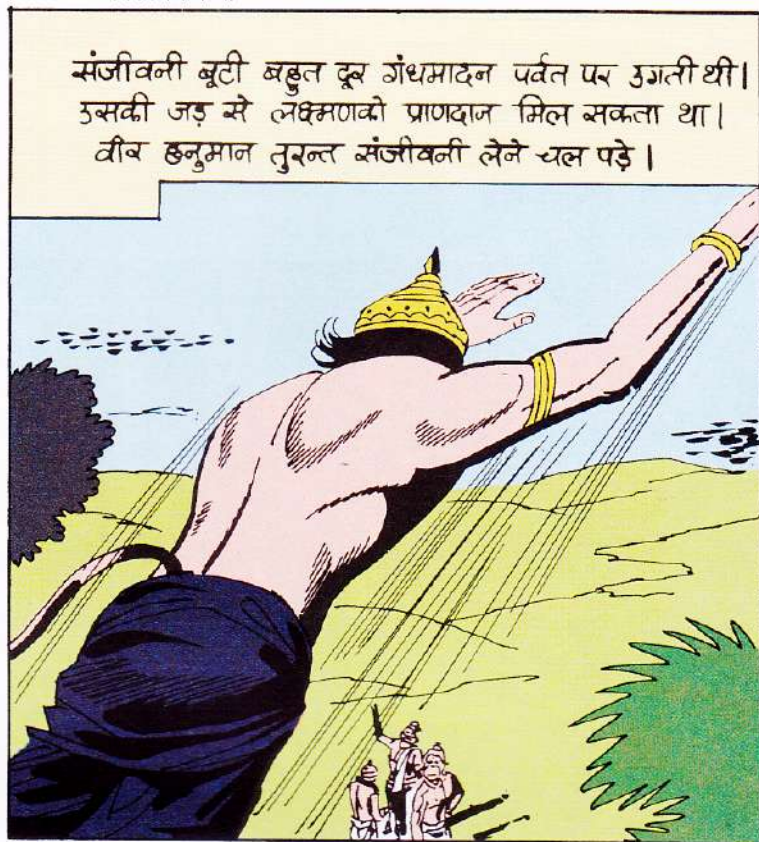
लक्ष्मण की चेतना लौट आयी। हजारों वानरों को भी जैसे जीवन-दान मिला।

सुबह फिर युद्ध आरंभ हुआ और रावण सोने के रथ में बैठ कर मैदान में आया। उसका मुकुट धूप में चमचमा रहा था।

कोई भी उसके सामने नहीं टिक सका। तब हनुमान के कंधे पर सवार हो कर राम राक्षस-राज रावण के सामने आये।

राम के बाण से रावण का रथ टूट गया। उसे काल निकट दिखने लगा।
तुम लौट सकते हो! मैं निहत्थे शत्रु पर वार नहीं करता!

रावण अपनी युद्ध-समिति के साथ मंत्रणा करने लगा।
अब सेना का नेतृत्व किसे सौंपा जायें?
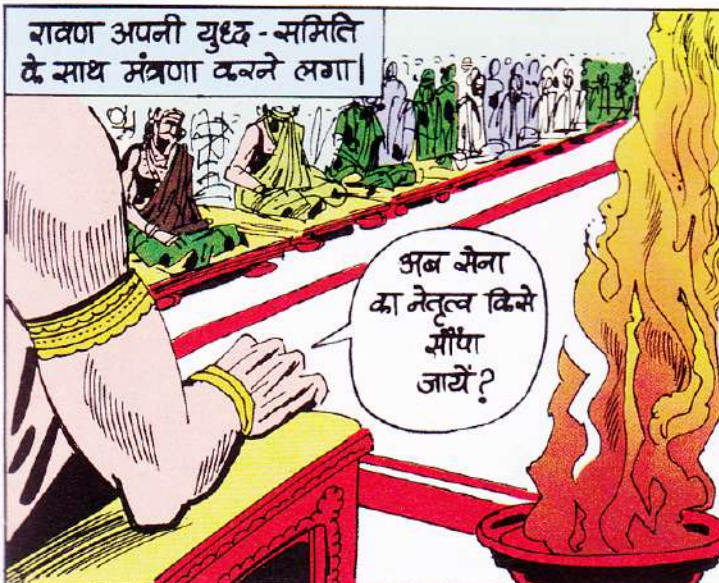
कुम्भकर्ण को जगाना चाहिए!
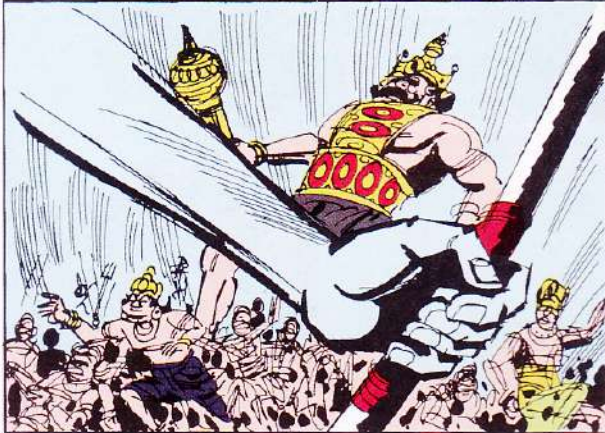
इन्द्रजित का यज्ञ पूरा हो गया तो वह अजेय हो जायेगा। परन्तु यज्ञ पूरा नहीं हो सका।
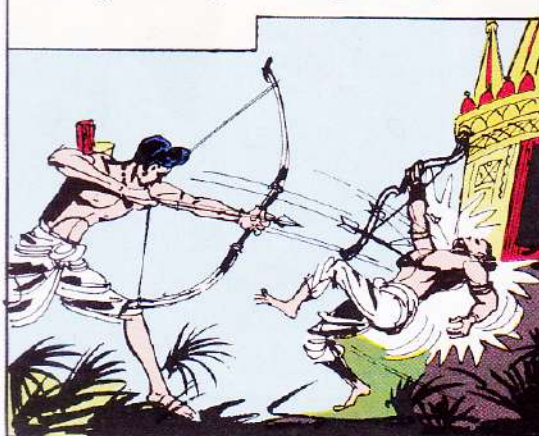
युध्द का अन्तिम चरण आ पहुँचा था।
रावण लंका के सिंह द्वार पर आया।
बाहर वानर सेना उपस्थित थी।
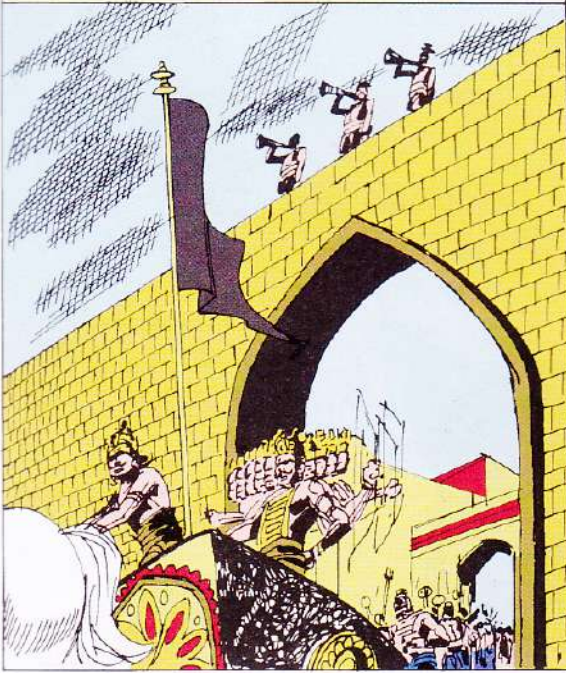
रावण का रथ बिजली की तरह कौंधता
और वानर-सेना को चीरता हुआ चला
गया।
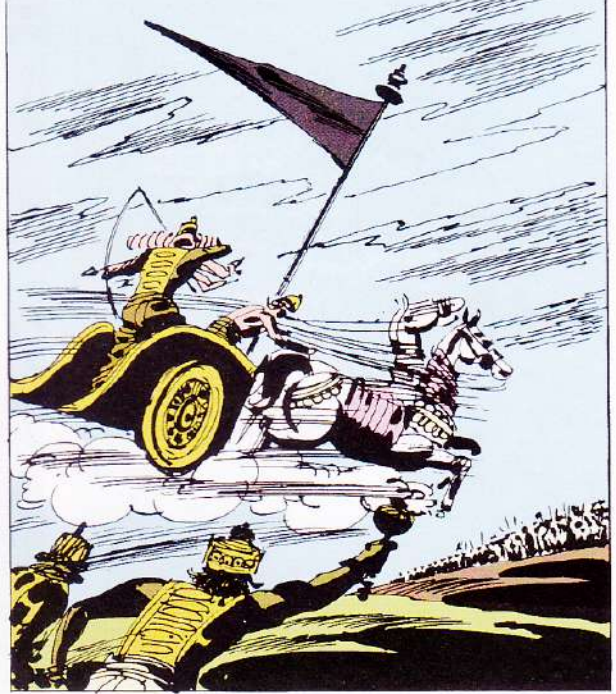
रावण महाबली था।
घमासान युध्द होने लगा।

अन्त में रावण और रामका
सामना हुआ।
रामने युध्द का अन्तिम बाण
छोड़ा।
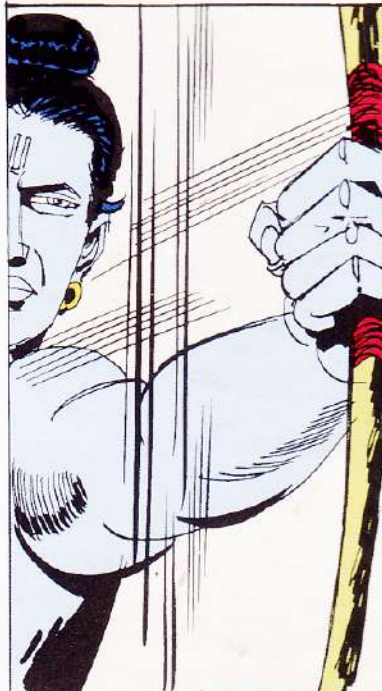
शत्रु का काम तमाम
हो गया। पाप पर
पुण्य की विजय हुई।

राजा रावण के मारे जाने पर
लंका में शोक का अंधेरा छा गया।

विभीषण को लंका का
राजा बनाया गया।

और फिर विजयी सेना जिस
राह से आयी थी उसी राह से
समुद्र के पार लौट चली।

आओ, प्रिये! तुम अपमानित अवस्था में इस रथ में लंका आयी थीं! अब इसी में सम्मान-सहित वापस चलो!

राम के अयोध्या लौटने का समय हो गया था। हनुमान समाचार देने के लिये आगे गये।
मैं शुभ समाचार लाया हूँ! चौदह वर्ष का बनवास पूरा हुआ! स्वामी घर आ रहे हैं!

सारे नगर-वासी राजकुमारों का स्वागत करने के लिये उमड़ पड़े। चारों ओर हर्ष की लहरें छा गयीं।
महाराज राम चिरायु हों!
राजकुमार लक्ष्मण चिरायु हों!
महारानी सीता चिरायु हों!

विदा की वेला आ पहुँची।
प्रिय मित्रो, अब तुम अपने घर लौट जाओ।
कभी हमारी सेवा की आवश्य-कता हो तो निस्सं-कोच सूचित कीजियेगा।

परन्तु हनुमान नहीं गये।
तुम नहीं जाओगे हनुमान?
मैं यहीं रह कर सदैव आपकी सेवा करूँगा।

महाकाव्य और पौराणिक कथाएं
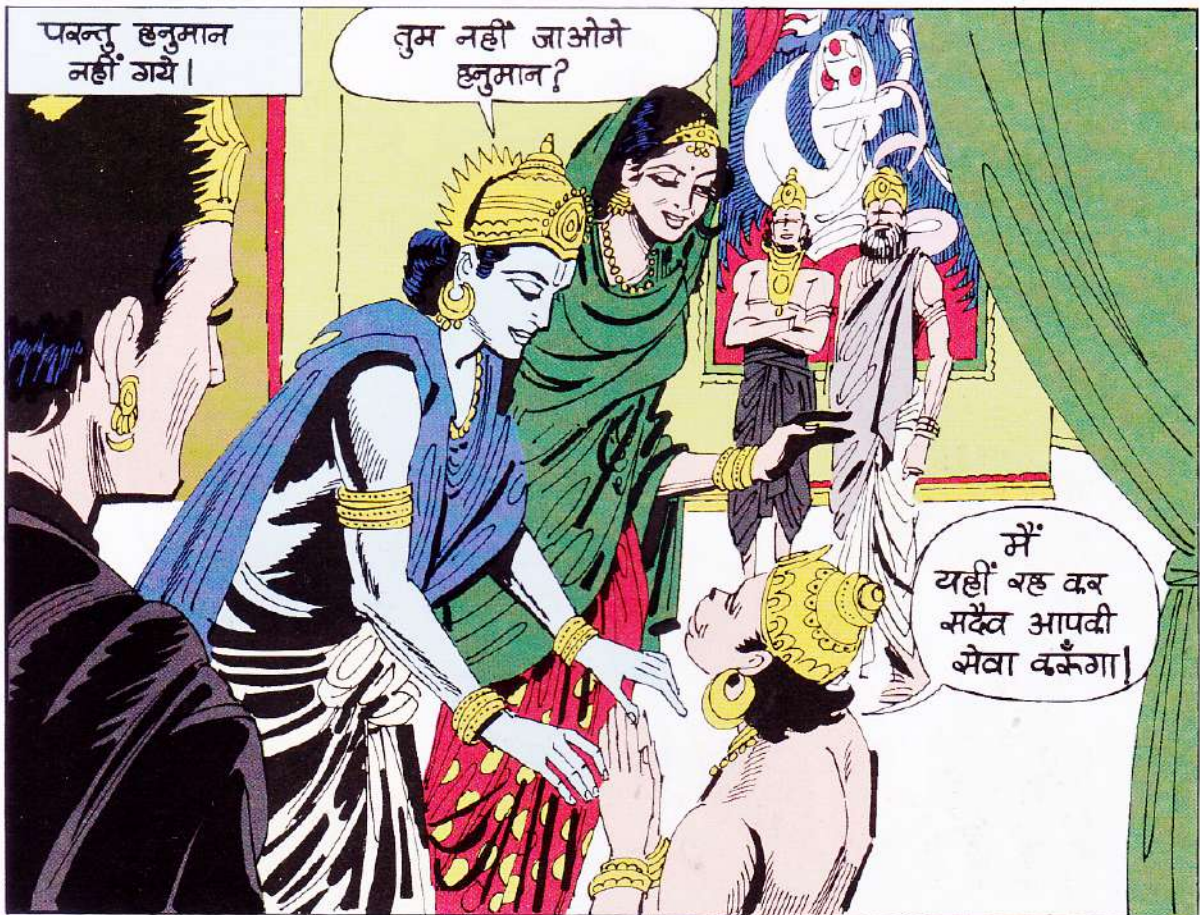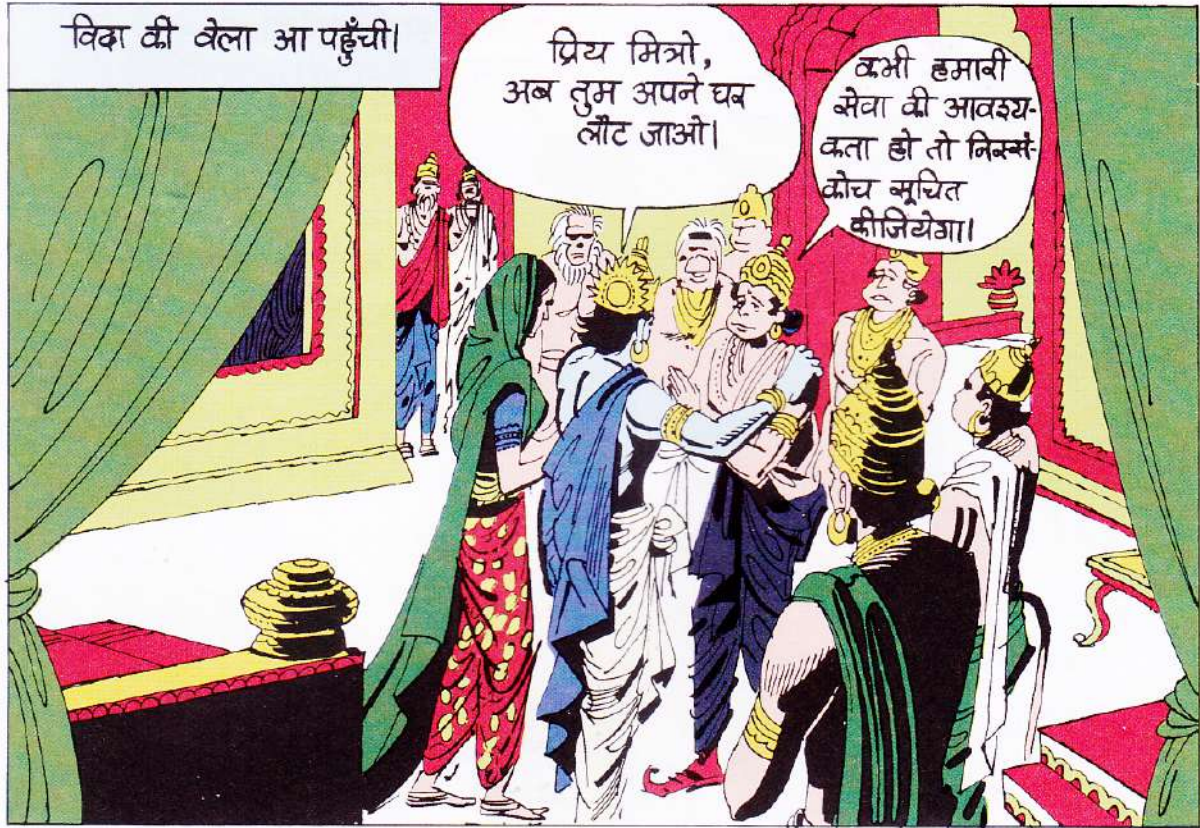
हनुमान

पवन और अंजना के पुत्र, हनुमान ने वानर का जन्म लिया तथापि अपने चरित्र के बल पर उन्होंने हिन्दू देवताओं में प्रमुख स्थान पाया। राम के प्रति उनकी एकनिष्ठ भक्ति ने उन्हें राम के अनन्य भक्त के रूप मे प्रसिध्दि दिलायी। इस भक्ति ने उनके विचारों को संकीर्ण नहीं किया और न उन्हें अहंकारी बनाया अपितु उनमें करुणा और प्रेम की भावना को और प्रबल किया। इसी से जब सीता रावण के अशोक वन मे अकेली विरह की अग्नि में जल रही थीं तब हनुमान उन्हें सान्त्वना देने में समर्थ हुए। इसी से वे अनेक वर्षो के पश्चात् राम के वीर पुत्रों, लव तथा कुश के समक्ष आत्म-समर्पण करने में भी समर्थ हुए। हनुमान वानर थे या नहीं, यह बात उन लोगों के लिए कोई महत्त्व नहीं रखती जो उनके अन्तर की उदात्त भावना को पहचानते हैं।

ISBN 978-81-8482-254